International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सोशल मीडिया में हिन्दी भाषा का बढ़ता प्रयोग एंव योगदान

Surekha

Ugc Net Qualified in (Hindi)

Surekha.kadian@gmail.com

प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान वहाँ बोली जाने वाली भाषा से होती है भारतवर्ष की राजभाषा के साथ साथ देश मे सर्वाधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा के रूप में हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत के प्रत्येक राज्य में हिन्दी भाषा बोली व जानी जाती है भाषा भावों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ महत्वपूर्ण सूचना व ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम रही है भाषा के द्वारा ही ना केवल अपने साहित्य को लोकतंत्रात्मक रखा जाता है बल्कि लोकतंत्र के महत्वपूर्ण अंग जनता भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के द्वारा लोकतंत्र में अपनी हिस्सेदारी का महत्व समझते हुए अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहे है। इस प्रकार भाषा को जनसंवाद के रूप में जोड़नें का काम आज के इस इलेक्ट्रॉनिक युग में इंटरनेट के माध्यम से तीव्रगामी रूप से हो रहा है सोशल मीडिया– फेसबुक,ट्विटर,ब्लॉग,इंस्टाग्राम टेलीग्राम,व्हाट्सएप आदि के द्वारा आज ग्लोबल लैंग्वेज को पीछे छोड़ते हुए हिन्दी भाषा ने अपने पैर पसार लिए हैं आज सोशल मीडिया में न केवल साहित्यकार व वृद्धजन बल्कि युवा वर्ग भी अपनी बात मातृभाषा में रखने से परहेज नहीं करते हैं।

सोशल मीडिया जहाँ वर्तमान में संचार व अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम की भूमिका निभा रही है वही जनमानस की भाषा माने जाने वाली हिन्दी भी सोशल मीडिया में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए हैं यहाँ तक कुछ समय पश्चात हिन्दी भाषा का वर्चस्व इतना होगा कि ईमेल आईडी भी हिन्दी में बनाई जाने लगेगी। आज सोशल मीडिया के सभी माध्यमों में हिन्दी लिखने वालों की संख्या बहुत अधिक बढ़ रही है ब्लॉग की दुनिया में सक्रिय अनेक लेखक हिन्दी में लिखना ही पसंद करते हैं। हिन्दी भाषा मे लिखने वालों का एक बडा वर्ग हमेशा ही सक्रिय देखने को मिलता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सोशल मीडिया ने आज बड़े–बड़े उद्योग,विज्ञापन, फिल्म प्रमोशन ,इलेक्शन,राजनीतिक मुद्दे व राजनीतिक टीका–टिप्पणी, साहित्य का विस्तार,व्यापार, वाणिज्य,ऑनलाइन क्रय–विक्रय, टेलीविजन व जनसाधारण आदि के लिए एक विश्वव्यापी प्लेटफार्म वह भी कम खर्च में उपलब्ध कराया है आज चुनाव के प्रचार प्रसार का स्वरूप सोशल मीडिया के माध्यम से बदल चुका है आज फेसबुक लाइव ने अनेक जन समूह को ऑनलाइन रूप से अर्थात् वर्चुअल मंच से जोड़ने व लोगों में अपनी बात को कमेंट बॉक्स में लिखकर सार्वजनिक विमर्श करने की गुणवत्ता को बढ़ाया है इस प्रकार आज सोशल मीडिया ने ही हिन्दी भाषा को राजभाषा से विश्व भाषा बनाने का बीड़ा उठाया है।

सोशल मीडिया में अपलोड हिन्दी भाषी वीडियो ने अनेक देशों के लोगो को अपनी ओर आकर्षित किया है जिसके परिणामतः हमारे ही देश के गैर हिन्दी भाषी भी आज हिन्दी भाषा के समझने, बोलने व लिखने की जरूरत को स्वीकार कर रहे हैं । आज हर चीज की सोशल मीडिया में उपस्थिति को जहाँ एक नए ट्रेंड के साथ जोड़ा जा रहा है वहीं हर संस्था,व्यक्ति, सरकार,कंपनी,साहित्यकार, साहित्य कर्मी,सामाजिक संस्था, नेता,अभिनेता की लोकप्रियता सोशल मीडिया में उसके फॉलोअर्स व प्रभाव की कसौटी पर नापी जा रही है ऐसे में किसी भी संवाद के जरीये अधिकाधिक जनता तक पैठ बनाए रखने के लिए हिन्दी भाषा की जिम्मेदारी कुछ ज्यादा ही बढ़ चुकी है क्योंकि हिन्दी ही भावों को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करने वाली एकमात्र भाषा है।

आज लगभग हर मुद्दे पर सोशल मीडिया में विचार विमर्श किया जा रहा है देश के प्रधानमंत्री जी भी किसी भी शुभ समाचार के लिए जनता को बधाई पहले सोशल मीडिया का ही प्रयोग करते हैं सोशल मीडिया प्रिंट मीडिया से अधिक तीव्र व जन तक पहुँच रखने वाला सशक्त माध्यम की अपनी छवि बना चुका है। इसी सोशल मीडिया के बढ़ते कदम की दिशा में हैशटैग ने भी अपनी गरिमा बनाई रखी है हिन्दी में जो भी संदेश देना चाहते हैं उसके बाद हैशटैग के साथ एक क्लिक अर्थात हम उस हैशटैग के जरीये उस संदेश से रिलेटेड अन्य पोस्ट पर पहुँच सकते हैं इस प्रकार हैशटैग अपने आप में एक लिंक है जिसके द्वारा उसी तरह की सभी पोस्ट को एक साथ एक पेज पर देखा जा सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यूट्यूब भी हमारे देश में एक अच्छा सोशल मीडिया का माध्यम रहा है आज जहाँ यूट्यूब के द्वारा न केवल ज्ञान की क्लासेस बल्कि खाना बनाना, साहित्यिक गतिविधियाँ, नृत्य, संगीत, हास्य साथ ही साथ किसी भी कार्यक्रम को यूट्यूब में अपलोड करके उसे लाइव अनेक दर्शकों को दिखाने के लिए अपलोड करने का प्रचलन की बढ़ चुका है। जनवरी 2021 के अनुसार जहाँ यूट्यूब यूजर्स दुनिया मे 2.29 बिलियन रहे हैं वहीं भारत में इसके 225 मिलियन यूजर्स रहे है जो की देश की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत रहा है जिसमें से अधिकांश वीडियों हिन्दी भाषा में ही बनाए व देखे गए है इसी तरह जुलाई 2021 के अनुसार भारत में फेसबुक यूजर्स की संख्या 433900000 हो गई जोकि देश की कुल जनसंख्या का 30.8 प्रतिशत रही है इस प्रकार सोशल मीडिया के बढ़ते प्रयोग का कारण हिन्दी भाषा ही है कि आज हमारे देश में अधिकांश लोग सहज व सरल रूप से सोशल मीडिया का प्रयोग कर अपने भावों की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

प्रो. वी. के. शर्मा के अनुसार, "देश के विकास का सम्बन्ध भाषा से है और भाषा का सम्बन्ध मीडिया के सहयोग से है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल राजभाषा हिन्दी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। यह विकास, बाज़ार और मीडिया की भाषा भी बन रही है, पूरे भारत और भारत के बाहर हिन्दी के द्रुत प्रचार–प्रसार और विकास का श्रेय मनोरंजन चैनल, समाचार चैनल, खेल चैनल और कई धार्मिक चैनल को दिया जा सकता है। आज के प्रौद्योगिकी के दौर में मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरा है और उसमें भी न्यू मीडिया के प्रति लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। भूमण्डलीकरण के दौर में मीडिया का दायरा काफ़ी विस्तृत हो चुका है। ऐसे में विभिन्न भाषाओं का विकास भी मीडिया के तहत हो रहा है। आज के दौर में मीडिया और हिन्दी भाषा एक दूसरे के सहयोगी माने जाते हैं। मीडिया के बिना आज कोई कार्य करना कठिन सा लगता है। भारत जैसे विशाल देश में जहाँ व्यापक क्षेत्र में हिन्दी बोली जाती है वहाँ इसके विकास में मीडिया का योगदान महत्त्वपूर्ण रहता है। यह बात सत्य है कि मीडिया के असर से हिन्दी के स्वरूप में इसके मूल स्वरूप से भिन्नता है लेकिन यही भिन्नता ही इस विकास की गाड़ी के पहिए हैं, एक विस्तारपूर्वक दायरे के साथ हिन्दी अपने आप में व्यापक है, मीडिया

के प्रयोगों के बावजूद हिन्दी के अस्तित्व पर कोई संकट नहीं है। दूसरी भाषा के कुछ शब्दों से ही हिन्दी के लायक बनी अन्यथा अपने मूल स्वरूप में सीमित होकर रह जाती है, यही वास्तविकता है। "हिन्दी भाषा में कही बात यदि अंग्रेजी अनुवाद में कही जाए तो यह निश्चित है कि इसकी स्पष्टता में कम से कम दस फीसदी की कमी जरूर आएगी, हिन्दी के विकास में ब्लॉगिंग ने निश्चित रूप से एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, इसका प्रमाण यह है कि हिन्दी के कई ऐसे ब्लॉग हैं जो लगभग 2500 व्यक्तियों द्वारा हर रोज़ देखे जाते हैं।

उद्योग और व्यपार के क्षेत्र में, जहाँ भारतीय भाषाओं के प्रयोग की पूर्ण उपेक्षा की जाती थी, अब हिन्दी सम्मानजनक स्थान प्राप्त करती जा रही है। रेडिया, टीवी तथा पत्र–पत्रिकाओं में हिन्दी में विज्ञापन देने की होड़ लगी रहती है। इन तथ्यों को देखते हुए कहा जा सकता है कि हिन्दी को देशव्यापी स्वीकार्यता मिल चुकी है और वह समय दूर नहीं जब हिन्दी पूर्ण रूप से भारत की एकमात्र भाषा बन जाएगी। हिन्दी भाषा को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में संविधान द्वारा आज आंदोलन चला हुआ है और पहले आंदोलन की शुरूआत हो रही थी। वास्तविकता तो यह है कि हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनाने की पहल हिन्दी भाषी नेताओं ने नहीं बल्कि महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुभाषचन्द्र बोस आदि ने हिन्दी भाषा के योगदान में अपनी आहुति डाली और महात्मा गांधी जी का तो यह नारा था –

"एक राष्ट्र भाषा हिन्दी हो, एक हृदय हो भारत जननी। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के विस्तार को फैलाने में रेडियो का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आकाशवाणी ने समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिन्दी को देश के कोने–कोने तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसमें हिन्दी फिल्में और फिल्मी गीतों का विशेष स्थान रहा है। हिन्दी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को पार कर रूस, चीन और यूरोप तक पहुँच जाती है। हिन्दी को देशव्यापी मान्यता दिलाने में फ़िल्मों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। डॉ. अर्जुन तिवारी का मत है कि, "जब मुम्बई में एफ.एम. स्टेशनों के लाइसेंस दिए गए तो

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 3, March- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पहले आधे स्टेशन अंग्रेजी प्रसारण के लिए निर्धारित थे किन्तु कुछ ही महीनों में वे भी हिन्दी में प्रसारण करने लगे क्योंकि अंग्रेजी लोग कम थे। मनोरंजन के अलावा आकाशवाणी के समाचार खेल कार्यक्रम प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल तथा किसानों, मजदूरों और बाल व महिला कार्यक्रमों ने हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

हिन्दी भाषा के विकास में पत्रिकाओं का काल भी बहुमुखी रहा। प्रयाग, मिर्जापुर, वृंदावन, मुम्बई, कोलकाता, कानपुर आदि शहरों से पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं। समय–समय पर समाचार–पत्र भी छपते थे।

आधुनिक युग में मीडिया का सामान्य अर्थ समाचार पत्र–पत्रिकाओं, टेलीविज़न, रेडियो इंटरनेट आदि से लिया जाता है। किसी भी देश की उन्नति व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है। अगर मैं कहूँ कि मीडिया समाज का निर्माण व पुनर्निर्माण करता है तो यह गलत नहीं होगा। अंग्रेजी की दासता से सिसकते भारतीयों में देशभक्ति व उत्साह भरने में मीडिया का बड़ा योगदान है।

सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने न केवल हमें पहले की तुलना में सामाजिक,सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से जागरूक किया है अपितु हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है सोशल मीडिया अपने मूल स्वभाव में जनतांत्रिक दिखता है तथा देश की अधिकांश जनता हिंदी भाषा का ही प्रयोग करती है जिसके परिणामतः सोशल मीडिया का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों की संख्या में भी काफी इजाफा हुआ है। सोशल मीडिया लोगों की तरह–तरह के रचनात्मक प्रयोगों का साथी बन रहा है नए लेखक नए साहित्य गढ़ रहे हैं ट्विटर हो या इसी तरह के दूसरे माध्यम मिनटों में किसी को आसमान पर बिठाने की कूबत रखते हैं और धराशाई करने की भी।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया में हिन्दी भाषा का प्रयोग अस्वभाविक रूप से बढ़ा है सोशल मीडिया ने हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा को विस्तार तो दिया ही है किन्तु इसके स्वरूप को भी परिवर्तित किया है लेकिन इस बात से भी नकारा नहीं जा सकता कि जब कोइ भाषा विभिन्न बोली बोलें जाने वालों व्यक्तियों व क्षेत्रों

से होकर गुजरेगीं तो इसके स्वरूप में परिवर्तन होगा ही,किंतु आज तकनीकी दृष्टि से सभी चुनौतियों से निपटने के बाद जब हिंदी भाषा सभी प्लेटफार्म में उपयोग हेतु उपलब्ध है तो इसके स्वरूप व शुद्धता पर गहन विचार ना करते हुए इसे जनसामान्य हेतु अभिव्यक्ति का सरल व सहज माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए वैसे भी सदियों बाद तो सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों में जनसंचार व जागरूकता का भाव विकसित हो सका है इस पर किसी भाषा की शुद्धता की कसौटी का विचार करके इस जनचेतना को अवरुद्ध नहीं करना चाहिए ।

सन्दर्भ–

1. रविन्द्र जाघव केशव मोरे. (2016) हिन्दी और मीडिया: बदलती प्रवृत्ति, दिल्ली: वाणी प्रकाशन
2. हंस (हिन्दी मासिक पत्रिका) सितम्बर 2018
3. डॉं. अम्ब्रीश त्रिपाठी. हिन्दी का नया वितान: सोशल मिडिया ISSN 2231–4989
4. प्रो. वी.के. शर्मा, मीडिया और हिन्दी, पृष्ठ 62
5. हिन्दी भाषा और मीडिया, पृष्ठ 31
6. प्रो. मोहिनी, राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास, पृष्ठ 3
7. डॉ. अर्जुन तिवारी, पत्रकारिता का इतिहास, पृष्ठ 105